B.Com Part - II Semester MJC (1)

Business organisation and managment

classmate
Date
Page

Q:- व्यावसायिक वित्त के अल्पकालीन स्रोतों को समझाइए।
explain the Sources of short term business finance.

Ans - वह पूंजी जो कि उद्योग के साधारण कार्यों में लगायी जाती है, कार्यशील पूंजी कहलाती है। इसका प्रयोग कर्मचारियों की मजदूरी तथा वेतन, विज्ञापन, चल सम्पत्ति के क्रय, उत्पादन व्यय, विक्रय व्यय तथा अन्य सामान्य खर्चों के भुगतान में किया जाता है। कार्यशील पूंजी का कार्यकाल स्थायी पूंजी की अपेक्षा कम होता है, अतः इसको अल्पकालीन पूंजी भी कहते हैं। अल्पकालीन पूंजी की परिभाषा के सम्बन्ध में दो विभिन्न विचारधाराएँ विद्यमान हैं — प्रथम विचारधारा के अनुसार कार्यशील पूंजी का आशय चालू सम्पत्ति (Current Assets) और चालू देनदारियों (Current Liabilities) से है और इसका समर्थन लिंकन, स्टेबिन्स तथा सलिबर्ट जैसे अर्थ-प्रबन्ध विशेषज्ञों ने किया है। इसके विपरीत, दूसरी विचारधारा के अनुसार कार्यशील पूंजी का अभिप्राय केवल चालू सम्पत्ति से है और इस विचारधारा के समर्थक फील्ड्स, मेयर्स, मीड तथा बेकर हैं।

कार्यशील अथवा अल्पकालीन पूंजी के स्रोत — Sources of working or short Term Capital — अल्पकालीन पूंजी प्राप्ति के मुख्य स्रोत निम्न प्रकार हैं —

(1) कार्यशील बैंकों से साख — कार्यशील पूंजी की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत व्यापारिक बैंक हैं। मौसमी कार्यशील पूंजी की प्राप्ति के लिए overdraft तथा Rediscounting of Bills, व्यापारिक बैंकों से Cash Credit की सुविधा प्राप्त की जाती है।

तथा short term loan के रूप में भी कार्यशील पूंजी प्राप्त की जाती है।

(2) व्यापारिक साख — इस स्रोत का प्रयोग प्रायः सभी व्यावसायिक संस्थाओं के द्वारा किया जाता है। इसके अन्तर्गत उधार अथवा स्थगित भुगतान के आधार पर सामग्री या आवश्यक माल प्राप्त कर लिया जाता है।

(3) अग्रिम प्राप्तियाँ — अनेक प्रतिष्ठित संस्थाएँ अपने ग्राहकों से अग्रिम राशि प्राप्त कर लेती है और उससे अल्पकालीन कार्यशील पूंजी की आवश्यकता की पूर्ति होती रहती है।

(4) जन-निक्षेप — भारत में स्थायी कार्यशील पूंजी प्राप्त करने में जन निक्षेपों की विशिष्ट भूमिका रही है। इसके अन्तर्गत उद्योगपतियों की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के आधार पर निश्चित ब्याज की दर अपने धन को एक निश्चित अवधि के लिए जमा कर देते हैं। यदि उपक्रम की भुगतान की नीति और साख उचित रहती है तो जन-निक्षेप का धन स्थायी रूप से बना रहता है।

(5) रोके गये लाभ — संस्था के विकास और विस्तार के साथ कार्यशील पूंजी की आवश्यकता बढ़ती जाती है और इसकी पूर्ति के लिए प्रत्येक वर्ष के लाभों में से कुछ राशि रोकी जा सकती है। इनसे संस्था पर कोई अतिरिक्त भार उत्पन्न नहीं होता। यदि संचित लाभ अधिक इकट्ठा हो जाते हैं तो उनमें से अतिरिक्त लाभांश तथा बोनस अंशों को बांटा जा सकता है।

(6) अन्य — मौसमी कार्यशील पूंजी के लिए देशी बैंकरों, साहूकारों, करों के संचय आदि से भी अल्पकालीन पूंजी की आवश्यकता पूरी की जा सकती है।

x ———————— x ———————— x

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professor
Deptt. of Commerce
Shershah College, SASARAM